SGM International School

Indira Nagar, Kalyanpur, Kanpur

Practice Sheet-1 (2020-21)

Subject : Hindi **Class : X** **Date : 26.03.2020**

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रार्थना का स्वरूप चाहे कोई हो, उसका मतलब सिफ अपने को बहुत छोटा और अपने आराध्य को बहुत बड़ा मानने से रहता है। प्रार्थना के माध्यम से आदमी अपनी साकार या निराकार अर्चनीय सत्ता के सफलता को प्राप्त करने और असफलता को झेलने की ताकत इकट्ठी करता है। वह प्रार्थना करते समय महसूस करता है कि सर्वशक्तिमान का साया उसकी रक्षा कर रहा है। प्रार्थना से अहंकार का क्षय होता है और स्वभाव में नम्रता पनपती है। उससे मन स्थिर होता है और मनोबल बढ़ता है जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। प्रार्थना उस विश्वास की अति को नियंत्रण में रखती है और आदमी को उसकी सीमाओं का आभाश कराती है। प्रार्थना के लिए उसके पूज्य प्रतीक, उसके स्थान, उसके विधि–विधान और उसकी शब्दावली आदि के हजारों प्रकार हो सकते हैं, उनके बारे में कितना भी रूचि भेद हो सकता है, पर प्रार्थना से मिलने वाले संतोष और सत्परिणाम के लिए एक बात में मति–भेद नहीं हो सकता कि प्रार्थना में भाव सात्विक और भावना शुद्ध रहनी चाहिए। ऐसा होने से आदमी अधिकाधिक अच्छा बिना नहीं रह सकता। वह सुख और शान्ति से जीना सीख जाता है। सर्वत्र सहस्त्रों व्यक्तियों के साथ रहने पर भी मन शान्त रहता है।

प्रश्न :

(क) प्रार्थना करते समय मनुष्य क्या अनुभव करता है ?

(ख) प्रार्थना से किस चीज का क्षय होता है तथा किस चीज की वृद्धि होती है ?

(ग) प्रार्थना कब सफल होती है ?

(घ) मनुष्य का मन शान्त कैसे रहता है ?

(ङ) सफलता से मनुष्य कैसी शक्ति संचित करता है ?